BA-III (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पंचम

मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग,
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (lnmu)

लोकगाथा :-

मैथिलीक लोकगाथाकाव्य अत्यधिक समृद्ध अछि। दीर्घ आख्यान पर आधारित गेयात्मक कथा लोकगाथा कहल जाइत अछि। एहिमध्य विभिन्न युगक इतिहास, समाजदर्शन, लोकजीवन एवं चारित्रिक उत्कर्ष सहज रूपें अंकित भेटैत अछि। वस्तुत: मैथिलीक लोकगाथा हिनजेतर समाजक रचना, थिक एवं हिनजेतर जातिहिक सामाजिक - सांस्कृतिक वस्तु स्थितिक यथार्थ परिचय दैत अछि। मैथिलीक किछु लोकगाथा काव्य थिक लोरिकायन, सलहेस, अंगाकुसुमा, दुलरादयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, रइआ रणपाल आदि। एहि मध्य लोरिकक प्रचार गोपजन मध्य, सलहेसक प्रसार - प्रचार दुसाधक बीच, दीनाभद्रीक मुसहरक बीच एवं केहरक डोम आ चमारक बीच अछि। मैथिलीक गाथागीतक रचना मिथिला - नेपालक सीमा - क्षेत्र आदिक थिक।

मैथिली लोकगाथामे मुख्यतः वीर, शृंगार ओ सिद्धि-साधना अभिव्यंजित भेल। परन्तु एहि मे विभिन्न वर्णजाति, धर्म-सम्प्रदाय, रीति-रिवाज, देवी-देवता, धारणा-विश्वास आदिक। तेहो सुन्दर अभिव्यक्ति भेल अछि। मैथिली गाथासभमे चित्रित नारीपात्र विशेष रूपें उल्लेख अछि। कुसुमा, दीना, चनैन, मंजरि, तिलेसरी आदि मध्यकालीन नारीक प्रतीक छथि।

मैथिली लोकगाथाक विशेषताए निम्नलिखित अछि। जेना - (1) लोकगाथाक रचियता अज्ञात होइत छथि ओ ओहि मध्य रचनाकारक व्यक्तित्वक अभाव रहैत अछि।

2. अलिखित रहबाक कारण एक मौखिक रूपें

3. एकरामे संगीत ओ नृत्यक अभिन्न साहचर्य रहैत अछि।

4. स्थानीयताक प्रभाव एवं उपदेशात्मक प्रवृत्तिक सर्वथा अभाव रहैत अछि।

5. एहिमे अनलंकरण एवं स्वाभाविकता आद्यन्त अनुवर्तमान रहैत अछि।

6. टेक-पदक बारंबार पुनरावृत्ति एहि मध्य होइत अछि।

7 एकर कथावस्तु विस्तृत ओ दीर्घ रहैत अछि।

Sarmjit
28/04/20